सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-20 22 अक्तूबर से 5 नवम्बर, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

एसयूसीआई(सी) की अपील

रेल यात्री किराया, माल भाड़ा व कलकत्ता मेट्रो किराया बढ़ोतरी के खिलाफ जोरदार प्रतिरोधी आन्दोलन खड़ा करें

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 11 अक्तूबर '13 को निम्नलिखित बयान जारी किया: यह घोर निन्दनीय है कि कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार के रेल मंत्रालय ने संचालन खर्च में बढ़ोतरी के बहाने पूँजीपति वर्गहित साधते हुए स्लीपर क्लास और एसी क्लासों के किरायों माल भाड़े में क्रमशः 2% और 1% की इस महीने से बढ़ोतरी करके आम लोगों पर एक बार फिर घातक प्रहार किया है। गत जनवरी में रेल किराये में सीधी 20% की बढ़ोतरी के ठीक पीछे-पीछे अत्यन्त अलोकतांत्रिक ढंग से संसद को दरकिनार करते हुए एक्जीक्यूटिव रूट से यह घोर नाजायज बढ़ोतरी कर दी गई है और इसके बाद आरक्षण शुल्कों, तत्काल शुल्क दरों, क्लॉकरेज, टिकट केन्सिल करवाने के शुल्कों और सुपरफास्ट सरचार्ज में बढ़ोतरी के छद्म भेष में एक और बढ़ोतरी कर दी गई है। यात्रियों पर इस किराया बढ़ोतरी का तमाचा जड़ा गया है जिनमें से 80% यात्री वे आम मेहनतकश लोग हैं जिनका जानलेवा पूँजीवादी शोषण के तहत खून का आखिरी कतरा तक

(शेष पृष्ठ 2 पर)

केन्द्र व प्रदेश सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ

एसयूसीआई(सी) की विशाल रैली

पटना में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. अरूण कुमार सिंह

पटना : खाद्यान्न सहित अत्यावश्यक सामानों की कीमतें आसमान छू रही हैं। राज्य और केन्द्र सरकार ने व्यापारियों-जमाखोरों-कालाबाजारियों को सामानों की कीमतों में मनमानी वृद्धि कर जनता को लूटने के लिए खुली छूट दे दी है। सूबे की जनता सुखाड़ और बाढ़ से तबाह है, उसे पर्याप्त राशन भी नहीं मिल रहा है। सिर्फ इतना ही नहीं, सुशासन और विकास के नारे की आड़ में राज्य की नीतीश सरकार कांग्रेस नेतृत्ववाली केन्द्र सरकार की ही जनविरोधी नीतियों को राज्य में लागू कर रही है। बिजली का निजीकरण कर, बिहार विद्युत बोर्ड का विखंडन कर बिजली दरों में कई गुना की बढ़ोतरी की गयी है। जनता के पैसे से निर्मित राज्य परिवहन निगम को पब्लिक प्राईवेट पार्टनरशिप के तहत निजी मालिकों के हाथों सौंप दिया गया है। बस-ऑटो भाड़े में बेतहाशा वृद्धि हुई है। शिक्षा-स्वास्थ्य की स्थिति यह है कि जिनके पास पैसे हैं, उन्हीं के लिए शिक्षा और इलाज है। गरीबों-मेहनतकशों के बच्चों को न सही शिक्षा मिल रही है और न ऐसे परिवारों के लिए इलाज की व्यवस्था है। सरकारी विभागों में कर्मचारियों की बहाली बंद है। जो भी बहालियां हो रही हैं, वे अनुबंध के आधार पर। शहरों में होल्डिंग टैक्स में दोगुनी बढ़ोतरी की गयी है, जबकि गली-मुहल्लों और सड़कों पर सफाई नदारद है। महिलाओं के साथ अत्याचार-बलात्कार-यौन शोषण की घटनाओं में इजाफा जारी है। बेरोजगारी का दंश झेल रहे सूबे के नौजवान अन्य राज्यों में पलायन कर रहे हैं, लेकिन वहां भी उन्हें इंसानी जिन्दगी मयस्सर नहीं है। बढ़ती महंगाई ने सूबे बिहार सहित पूरे देश के आम अवाम का जीना

(शेष पृष्ठ 7 पर)

महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, घोटालों व महिलाओं पर अत्याचार के खिलाफ

एसयूसीआई(सी) का विशाल विरोध प्रदर्शन

रोहतक : भयंकर महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, तरह-तरह के घोटालों व महिलाओं पर अत्याचारों को बढ़ावा देने वाली केन्द्र व प्रदेश सरकार की जनविरोधी नीतियों और लोगों को बांटने वाली वोट बैंक की भ्रष्ट राजनीति के खिलाफ एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) ने 8-अक्तूबर को रोहतक शहर में एक जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। रोहतक, झज्जर, सोनीपत, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, गुड़गांव, मेवात, भिवानी, हिसार, जीन्द, पानीपत, कैथल व कुरुक्षेत्र समेत प्रदेश के अनेक जिलों से हजारों लोग पहले पालिका बाजार के सामने हुडा काम्पलैक्स में जमा हुये और अपनी मांगों के जोशीले गगनभेदी नारे लगाते

(शेष पृष्ठ 2 पर)

रेल किराया वृद्धि ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

निचोड़ा जा रहा है, जब कम्पार्टमेण्टों के रखरखाव से लेकर टायलेटों की साफ-सफाई, अन्य सेनीटेशन फैसिलिटियों में, यात्री सुविधाओं में, पटरियों की रख-रखाव व मरम्मत और सफर करने वालों की सुरक्षा और बचाव में बड़ी तेजी से गिरावट आती जा रही है और कमाये जाने वाले राजस्व का बहुत बड़ा हिस्सा संचालन के हर स्तर पर बढते भ्रष्टाचार द्वारा चट कर लिया जाता है जिसमें केवल आला अफसर, बेईमान ठेकेदार-सप्लायर-वेण्डर ही नहीं बल्कि प्रभारी मंत्री भी संलिप्त हैं, जैसा कि कुछ महीने पहले भण्डाफोड़ हुआ था। हालाँकि सरकार ने एक स्टंट की पूर्व वेला में साधारण सैकण्ड क्लास और मासिक टिकट का किराया फिलहाल अछूता रखा हैं। पूरी-पूरी सम्भावना है कि ये किराए भी जल्द ही बढ़ जाने वाले हैं क्योंकि निरंकुश शक्तियाँ दे दी जाने से सरकार ने पिछले बजट के दौरान लागू किए गए नीति सम्बन्धी शातिराना बदलाव के रास्ते यात्री किराए और माल भाड़े समय-समय पर संशोधित करने की खुद ही अनाधिकार चेष्टा की है। इस तरह ईंधन शुल्कों और दूसरे प्रशासनिक खर्चों में बढ़ोतरी के बहाने यात्री किराए और माल भाड़े में थोड़े-थोड़े समय के बाद बढ़ोतरी आए दिन की बात हो गई। किसी सरकार को अगर लोगों की जरूरतों की जरा भी फिक्र होती तो सब्सिडी देकर यात्री किराए और माल भाड़े को वहन करने की सीमा में रखने लायक इनकी दरें स्थिर रखकर भुक्त भोगी यात्रियों का खयाल रखती, पर कांग्रेस-नीत पूँजीवादी सरकार अतिरिक्त आर्थिक-बोझ थोप कर पहले ही मरे हुए लोगों का गला काट रही है। सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि सरकार के इन घोर जनविरोधी कदमों के न केवल बुर्जुआ पार्टियां बल्कि यहाँ तक कि नकली मार्क्सवादियों से बने दिखावटी विपक्ष की वजह से एक पर एक सुरक्षित गलियारा मिल रहा है जो प्रायः इस या उस मुद्दे कार्रवाई को बाधित करते रहते हैं वास्तव में सत्ता-सुख के लिए शासक पूँजीपति वर्ग के चहेते बने रहने के लिए कोई प्रतिरोध नही कर रहे हैं।

हम कलकत्ता मेट्रो रेल द्वारा एक ही झटके में 100 से 125% तक बेतहाशा बढ़ाए गए किराये का भी विरोध करते हैं क्योंकि यह उन लाखों दैनिक यात्रियों के लिए बड़ी भारी तकलीफ का सबब बनता जा रहा है जिनके लिए किसी उचित यातायात व्यवस्था से नितांत अभाव ग्रस्त एक सबसे बड़े महानगर में रोजाना मेट्रो सेवा उपयोगी सिद्ध हो रही है। विभिन्न बड़े-बड़े शहरो में चालू की गई यह मेट्रो सेवा काफी बड़ी संख्या में यात्रियों द्वारा इस्तेमाल की जाती है और इसलिए अगर जरूरत पड़े तो मेट्रो रेल को सब्सिडी देकर भी अपनी जिम्मेदारी निभाने से सरकार किसी तरह भी खोटी दलीलों के पुलिन्दे के छद्मावरण में इन्कार नहीं कर सकती क्योंकि मेट्रो एक एलायड रेल सेवा के तौर पर सरकारी क्षेत्र में आती है।

हम एकबार फिर हमारे देशवासियों को याद दिला दें कि एकमात्र रास्ते से इस निरंकुश सरकार को केवल बढ़ाए गए किराये ही नहीं बल्कि मनमाने किराए-माल भाड़े बढ़ाने के इस तानाशाही कानून को भी वापस लेने के लिए मजबूर किया जा सकता है, वह निचले स्तर से यात्रियों की कमेटियाँ बनाकर देशव्यापी जोरदार सतत संगठित जनवादी आन्दोलन गठित करने के द्वारा जल्दी से ऐसा एक ताकतवर प्रतिरोध आन्दोलन सच्चे हृदय से गठित करने के लिए सबका आह्वान करते हैं।

अधिकारी को ज्ञापन सौंपते हुए कॉमरेड सत्यवान

महंगाई, बेरोजगारी,...

(पृष्ठ 1 का शेष)

हुये लघु सचिवालय पर पहुंचे। उपायुक्त रोहतक की अनुपस्थिति में सीटीएम को पार्टी नेताओं ने लोगों की चुभती हुई तकलीफों व समस्याओं से जुड़े प्रमुख मुद्दों पर मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री के नाम 20 सूत्री मांगों का एक जनज्ञापन सौंपा। विरोध प्रदर्शन बेहद अनुशासित व भव्य था जिसमें शामिल मजदूर, किसान, बेरोजगार युवा, छात्र व महिलाएं अपनी मांगों की पट्टिकाएं व बैनर लिये हुये थे। प्रर्दशनकारियों के नारों से शहर गूंज उठा।

विरोध प्रदर्शन की अगुवाई एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय कमेटी सदस्य एवं राज्य सचिव सत्यवान, राज्य कमेटी के वरिष्ठ सदस्य अनूपसिंह मातनहेल, राजेन्द्र सिंह, ईश्वरसिंह राठी, रामफल, रोशनलाल, हरिप्रकाश व विजयकुमार ने की और प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित किया।

आन्दोलनकारियों को सम्बोधित करते हुए पार्टी नेताओं ने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकार की पूंजीपति-पोषक व जनविरोधी नीतियों से सर्वत्र महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार व बड़े-बड़े घोटाले निरन्तर बढ़ रहे हैं। रिलायन्स-टाटा-जिन्दल जैसे बड़े पूंजीपति घराने, मन्त्री व बड़े अधिकारी इनमें लिप्त हैं। डीजल, पेट्रोल, रसोई गैस के दाम बढ़ाने, खाद को नियन्त्रण मुक्त करने, बिजली के रेट व बस-भाड़े बढ़ाने, टोल टैक्स लगाने, शिक्षा व इलाज जैसी बुनियादी सेवाओं को प्राइवेट हाथों में देने तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली को ध्वस्त कर खुदरा व्यापार में एफ.डी.आई. लाने के सरकारी निर्णयों से जनजीवन में दुर्दशा बढ़ी है। निजीकरण व भूमण्डलीकरण की नीतियों से सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पहले से भी ज्यादा संकट में फंस गई है जिससे हर क्षेत्र में तबाही मची हुई है। महिलाओं की इज्जत-आबरू और उनके जीवन को बचाने के लिए सरकार कतई गम्भीर नहीं है। सभी ने बढ़ते गैंगरेप, बलात्कार, यौन-विकृतियों पर रोकथाम लगाने, प्रदेश के स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालयों में अपराधमुक्त वातावरण बनाने की मांग की। झज्जर जिला के गांव पाटौदा के एक निहायत गरीब मां-बाप की 5 वर्षीय बच्ची को अपहरणकर्ताओं के चंगुल से छुड़ाने का भी एक ज्ञापन मुख्यमंत्री के नाम दिया।

प्रदर्शनकारियों ने कहा कि हुड्डा सरकार ने नए रोजगारों का सृजन नहीं किया, उल्टे एक तरफ हरियाणा नम्बर एक का माडल राज्य बनाने के झूठे सब्ज बाग दिखाकर तो दूसरी तरफ लाठी-गोली का जबरन इस्तेमाल करके किसानों को भूमिहीन बना दिया व उनके रोजगार छीन लिए। सरकार द्वारा एस.ई.जैड. के लिये ली गई भूमि घोटालों को संरक्षण देने और अशोक खेमका व संजीव चतुर्वेदी जैसे कर्तव्य परायण अधिकारियों-कर्मचारियों को प्रताड़ित करने का कड़ा विरोध किया गया। इन मामलों की जांच सुप्रीम कोर्ट के जज से कराने की मांग की गई। शासक पार्टी के स्वार्थ में अलग से अध्यापक व पुलिस भर्ती बोर्ड बनाने तथा गोरखपुर में परमाणु संयंत्र बनाने का निर्णय रद्द करने और सस्ते, सुलभ व त्वरित न्याय के लिए हरियाणा का उच्च न्यायालय प्रदेश के बीच में (रोहतक) लाने की भी मांग की।

ज्ञापन में किसानों के कर्जे समाप्त करने, उन्हें लाभकारी मूल्य देने, रिलायन्स एस.ई.जैड. के लिए अधिग्रहीत भूमि उसके मालिकों को वापस देने, नहरी पानी का न्यायसंगत बटवारा करने, टोल टैक्स व प्रोपर्टी टैक्स हटाने, बिजली दर वृद्धि वापस लेने, मनरेगा में 350 रु. की चालू दिहाड़ी लागू करने, बेरोजगारी भत्ता 5000 रुपये महीना देने, बुढ़ापा व विधवा पैंशन 2000 रु. महीना करने, आशा, मिड-डे-मील, आंगनवाड़ी, ग्रामीण सफाई कर्मचारी व चौकीदारों समेत मजदूरों को 15000 रुपये न्यूनतम वेतन देने, भवन निर्माण मजदूर-कारीगरों का पंजीकरण सरल करने व उनकी आर्थिक सहायता बढ़ाने, शिक्षा व इलाज सभी को मुफ्त उपलब्ध कराने की मांग की गई।

इन मांगों के लिए जन आंदोलन जारी रखने की घोषणा करते हुए एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) ने घोषणा की कि कांग्रेस व भाजपा की परस्पर मिलीभगत का पर्दाफाश किया जायेगा तथा कांग्रेस, भाजपा समेत विभिन्न दलों द्वारा लोगों को जात-पात, इलाका व धर्म के नाम पर बांटने, उनमें द्वेष पैदा करने की चुनावी चालों से उन्हें सजग किया जायेगा और सभी मेहनतकशों, कमेरे लोगों को संघर्ष के एक सांझे मंच पर लाने के लिए ईमानदार व संघर्षशील लोगों को लेकर जगह-जगह जन कमेटियों का निर्माण किया जायेगा ताकि वोट-बैंक की भ्रष्ट व फूटपरस्त राजनीति को सिरे से नकारा जा सके और उसे परास्त किया जा सके।

राजनीति शिक्षण शिविर आयोजित

कटरास (झारखण्ड): कटरास में 14-15 सितम्बर को ऑल इण्डिया यूनाइटिड ट्रेड यूनियन सेण्टर (एआईयूटीयूसी) की झारखण्ड राज्य कमेटी की ओर से दो दिवसीय राजनीति शिक्षण शिविर लगाया गया। शिविर का संचालन एआईयूटीयूसी के सर्वभारतीय अध्यक्ष कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने किया। जिन विषयों पर कॉमरेड चक्रवर्ती ने चर्चा की, वे थे मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय परिस्थिति, मजदूर आन्दोलन, विश्वव्यापी आर्थिक संकट, साम्राज्यवादी युद्ध और मार्क्सवाद- लेनिनवाद के कुछ पहलू। क्लास में विभिन्न उद्योगों व जिला भर से आये लगभग 150 श्रमिकों ने भाग लिया। एसयूसीआई (सी) के झारखण्ड राज्य सचिव कॉमरेड रबिन समाजपति, एआईयूटीयूसी के राज्य सचिव कॉमरेड सिद्धेश्वर सिंह, एआईयूटीयूसी के राज्य अध्यक्ष कॉमरेड केपी सिंह भी मंच पर मौजूद थे।

द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद

जे वी स्तालिन

मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी का संसार के प्रति दृष्टिकोण द्वंद्वात्मक भौतिकवादी है। इसे द्वंद्वात्मक भौतिकवाद इसलिए कहते हैं कि प्राकृतिक घटनाओं को देखने, परखने और पहचानने का यह ढंग द्वंद्वात्मक है तथा इन प्राकृतिक घटनाओं की इसकी व्याख्या, धारणा और सिद्धांत-विवेचना भौतिकवादी है।

सामाजिक जीवन के अध्ययन के लिए द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धांतों पर विचार किया गया है। समाज और उसके इतिहास के अध्ययन तथा सामाजिक जीवन की घटनाओं पर द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का यह विस्तार ही ऐतिहासिक भौतिकवाद है।

अपनी द्वंद्वात्मक पद्धति की चर्चा करते हुए मार्क्स और एंगेल्स अक्सर हेगेल का उल्लेख करते हैं कि उन्होंने द्वंद्ववाद के मुख्य लक्षणों का प्रतिपादन किया था। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि मार्क्स और एंगेल्स के द्वंद्ववाद का वही रूप है जो हेगेल के द्वंद्ववाद का था। वास्तव में मार्क्स और एंगेल्स ने हेगेल के द्वंद्ववाद से वह सारतत्व ले लिया जो ''विवेक-संगत'' था और उसका आगे इस प्रकार विकास किया कि उसे एक आधुनिक वैज्ञानिक रूप मिल जाए। उन्होंने इसका हेगलीय भाववादी आवरण उतार फेंका था।

मार्क्स ने लिखा था: ''मेरी द्वंद्वात्मक पद्धति हेगेल से मूलत: भिन्न ही नहीं, वरन् उससे ठीक उल्टी दिशा में है। हेगेल के अनुसार वास्तविक जगत का निर्माण चिंतन-क्रिया की प्रेरक शक्ति से हुआ है। चिन्तन-प्रक्रिया को 'भाव' का नाम देकर वे उसके स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। वे कहते हैं कि यह 'भावजगत' ही वास्तविक जगत का निर्माण करता है। हेगेल के लिए वस्तु जगत, 'भाव' का ही बाह्य घटनात्मक रूप है। इसके विपरीत मेरी दृष्टि से, भाव मानव चित्त में प्रतिबिम्बित और चिंतन के रूप में रूपांतरित भौतिक संसार के सिवा और कुछ नहीं है।'' (कार्ल मार्क्स, पूंजी खंड 1, पृष्ठ 30)

अपने भौतिकवाद का वर्णन करते हुए मार्क्स और एंगेल्स अक्सर फायरबाख का उल्लेख करते हैं कि उन्होंने भौतिकवाद को पुन: प्रतिष्ठित किया था। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि मार्क्स और एंगेल्स के भौतिकवाद का वही रूप है जो फायरबाख के भौतिकवाद का है। वास्तव में मार्क्स और एंगेल्स ने फायरबाख के भौतिकवाद से उसका 'सारतत्व' लेकर उसे एक वैज्ञानिक दार्शनिक सिद्धांत के रूप में विकसित किया था, उसके भाववादी और धार्मिक नैतिक खोल को उन्होंने उतार फेंक दिया था। यद्यपि फायरबाख भौतिकवादी थे फिर भी उन्हें भौतिकवाद नाम से चिढ़ थी। एंगेल्स ने कई बार कहा भी था कि ''भौतिकवादी आधार होने पर भी फायरबाख, परंपरागत भाववादी बंधनों में जकड़े हुए थे।'' और यह भी कि, '' फायरबाख के धर्म और नीति-नैतिकता संबंधी दर्शन को देखने से उसका वास्तविक भाववाद प्रकट हो जाता है।''

डायलेक्टिक्स (द्वंद्ववाद) शब्द, ग्रीक भाषा के डायलेगो शब्द से बना है, जिसका अर्थ है किसी विषय पर गंभीर चर्चा-बहस करना, वाद-विवाद करना। प्राचीन समय में द्वंद्ववाद वह कला थी जिससे कोई वक्ता, अपने विरोधी के तर्क में असंगति दिखाकर और उसका निराकरण करके सत्य का प्रतिपादन कर सकता था। उस समय ऐसे दार्शनिक विद्यमान थे जिनका विश्वास था कि विचारों में परस्पर विरोध के प्रदर्शन से और विरोधी मतों के संघर्ष को स्पष्ट कर देने से, सत्य की प्रतिष्ठा हो सकती है और उसे प्रतिष्ठित करने की यह सर्वश्रेष्ठ पद्धति है। यह द्वंद्वात्मक पद्धति, विचार क्षेत्र से बाहर प्राकृतिक घटनाओं पर लागू की गई है। प्रकृति को जांचने-परखने की द्वंद्वात्मक पद्धति में उसका विकास हुआ। इसके अनुसार प्रकृति के बाह्य रूप सतत् गतिशील हैं और उनमें निरंतर परिवर्तन हो रहा है। इसके अनुसार प्रकृति की परस्पर-विरोधी शक्तियों की क्रिया-प्रतिक्रिया के फलस्वरूप एवं प्रकृति की विपरीतताओं के विकास से ही प्रकृति का विकास हुआ है।

सार रूप में द्वंद्ववाद पराभूतवाद का बिल्कुल उल्टा है।

1. मार्क्सवादी द्वंद्वात्मक पद्धति के मुख्य लक्षण इस

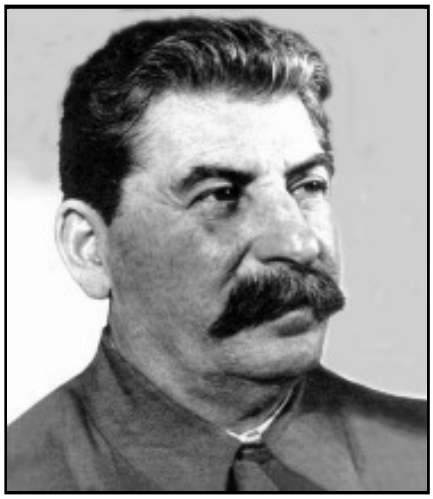

प्रकार है: (क) पराभूतवाद के विपरीत, द्वंद्ववाद के अनुसार प्रकृति ऐसे तत्वों एवं पदार्थों का आकस्मिक संगठन नहीं है जो परस्पर स्वतंत्र,विच्छिन्न और असम्बद्ध हैं। द्वंद्ववाद के अनुसार प्रकृति सम्बद्ध और पूर्ण इकाई है। उसके पदार्थ और बाह्य रूप एक-दूसरे पर निर्भर हैं, एक-दूसरे से जीवंत रूप से सम्बद्ध हैं और परस्पर एक-दूसरे द्वारा निर्धारित होते हैं।

इसलिए द्वंद्वात्मक पद्धति का यह सिद्धांत है कि अपने चारों ओर के परिवेश से अलग करके, कोई भी प्राकृतिक घटना अपने आप में जानी-परखी नहीं जा सकती। कारण यह है कि चारों ओर की परिस्थितियों से अलग करके और उनके प्रसंग में उस पर विचार न करने से वह घटना, प्रकृति के किसी भी क्षेत्र की घटना, हमारे लिए निरर्थक हो जाती है। फलत: हम प्रकृति की किसी भी घटना को तभी समझ सकते हैं और तभी उसकी व्याख्या कर सकते हैं जब हम उसके चारों ओर के संगठन के अविभाज्य संदर्भ में उस पर विचार करें। हम यह सोचकर उसकी व्याख्या करें कि उसकी रूपरेखा उसके चारों ओर के संगठन से निर्धारित हुई है।

(ख) पराभूतवाद की तरह द्वंद्ववाद का यह सिद्धांत नहीं है कि प्रकृति विराम और गतिहीनता तथा अचल जड़ता और स्थिरता का नाम है। प्रकृति का लक्षण है अविराम गतिशीलता और परिवर्तन, नित्य नवोन्मेष और विकास। इस परिवर्तन क्रम में कुछ तत्वों का उन्मेष और विकास होता रहता है तो कुछ का ह्रास और नाश भी होता रहता है।

इसलिए द्वंद्ववादी पद्धति के अनुसार, प्राकृतिक घटनाओं की परस्पर निर्भरता और सम्बद्धता को ध्यान में रखकर उनपर विचार करना ही काफी नहीं है। हमें उनकी गति, विकास, परिवर्तन तथा उनके निर्माण और विनाश को भी ध्यान में रखकर उन पर विचार करना होगा।

द्वंद्वात्मक पद्धति के अनुसार, मूलत: वह वस्तु उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जो उस समय स्थायी मालूम पड़ती है जबकि उसका ह्रास पहले ही आरंभ हो चुका है। महत्वपूर्ण वस्तु वह है जिसका अभ्युदय और विकास हो रहा हो, चाहे उस समय वह अस्थायी ही प्रतीत होती हो, क्योंकि द्वंद्वात्मक पद्धति उसी को अजेय मानती है जिसका अभ्युदय और विकास हो रहा है।

एंगेल्स ने लिखा है-''छोटी से छोटी चीज से लेकर बड़ी से बड़ी चीज तक, बालू के एक कण से लेकर सूरज तक, लघुतम जीव कोशिका से लेकर मनुष्य तक, सम्पूर्ण प्रकृति सतत् गतिमय और परिवर्तनशील है। उसकी स्थिति निर्माण और निर्वाण के अविराम प्रवाह में है।''(एंगेल्स, डाइलैक्टिक्स ऑफ नेचर)

इसलिए एंगेल्स के ही शब्दों में, ''द्वंद्ववाद वस्तुओं और उनके गोचर आकार को उनकी परस्पर सम्बद्धता, गतिशीलता तथा उनके संयोग, अभ्युदय और निर्वाण के प्रसंग में अवश्य ही जांचता-परखता है।'' (वही)

(ग) पराभूतवाद की तरह द्वंद्ववाद का यह सिद्धांत नहीं है कि विकसित होने का अर्थ सीधे-सीधे बढ़ना है जहां परिमाण में परिवर्तन होने से गुणों में परिवर्तन नहीं होता। द्वंद्ववाद के अनुसार, विकास क्रम में हम अदृश्य और छोटे परिमाणगत परिवर्तनों से, स्पष्ट और मौलिक गुणगत परिवर्तनों तक पहुंच जाते हैं। इस विकास-क्रम में गुणगत परिवर्तन धीरे-धीरे न होकर हठात् एक मंजिल से दूसरी मंजिल तक छलांग के रूप में तेजी से होते हैं। ये परिवर्तन आकस्मिक नहीं होते हैं। ये धीरे-धीरे घटित होने वाले प्राय: अदृश्य परिमाण संबंधी परिवर्तनों के संचय का स्वाभाविक परिणाम होते हैं।

इसलिए द्वंद्वात्मक पद्धति के अनुसार विकास क्रम का यह अर्थ नहीं है कि जो पहले हो चुका है अब वही सीधे-सीधे दोहराया जायेगा। विकास कोल्हू के बैल की तरह एक ही जगह चक्कर खाने का नाम भी नहीं है। विकास की गति ऊर्ध्वोन्मुखी और अग्रगामी होती है। विकास पहले की गुणात्मक परिस्थिति से दूसरी गुणात्मक परिस्थिति तक संक्रमण का नाम है। विकास सरल से संश्लिष्ट और निम्न से ऊर्ध्व की ओर होता है।

एंगेल्स ने लिखा है –''प्रकृति द्वंद्ववाद की कसौटी है और आधुनिक प्रकृति विज्ञान के बारे में यह स्वीकार करना पड़ता है कि उसने इस कसौटी के लिए अत्यंत मूल्यवान सामग्री दी है जो प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इस प्रकार उसने सिद्ध कर दिया है कि अंतत: प्राकृतिक क्रम द्वंद्वात्मक है न कि पराभूतवादी। यह क्रम किसी चिर-अपरिवर्तनशील वृत्त में चक्कर काटने वाली गति नहीं बल्कि वास्तविक इतिहास के निर्माण की गति है। यहां पर सबसे पहले डार्विन का उल्लेख करना चाहिए जिसने प्रकृति की पराभौतिक कल्पना पर दु:सह प्रहार किया था और सिद्ध किया था कि आज का चराचर विश्व, वनस्पति, जीव और फलत: मनुष्य भी सभी कुछ उस विकास की प्रक्रिया की उपज है जो करोड़ों वर्षों से चलती आई है।'' (एंगेल्स, ड्यूहरिंग मत खंडन)

परिमाणगत विकास से गुणगत विकास तक के संक्रमण का नाम द्वंद्वात्मक विकास है। इस सिद्धांत की व्याख्या करते हुए एंगेल्स ने लिखा है –''भौतिक-विज्ञान में प्रत्येक परिवर्तन का अर्थ है परिमाण का गुण में संक्रमण, जो किसी भी वस्तु में निहित अथवा प्रविष्ट गति के परिमाण में परिवर्तन से ही होता है। उदाहरण के लिए, पानी के तापमान का प्रभाव पहले उसके द्रव गुण पर नहीं पड़ता है। परंतु उस द्रव(जल) का तापमान ज्यों-ज्यों बढ़ता या गिरता है, त्यों-त्यों वह क्षण निकट आता जाता है जब या तो पानी भाप बन जाता है या जमकर बर्फ हो जाता है, जब द्रव स्थिति ज्यों की त्यों नहीं बनी रहती है। ... प्लेटिनम के तार को दहकाने के लिए एक न्यूनतम विद्युत् प्रवाह आवश्यक होता है। प्रत्येक धातु का एक निश्चित तापमान होता है जब वह पिघलने लगती है। आवश्यक तापमान प्राप्त करने के हमारे पास जो साधन हैं उनसे प्रयोग करके द्रव पदार्थ के शीत-उष्ण ताप निश्चित कर कर दिए गए हैं जबकि यथेष्ट शीत-उष्ण प्रभाव से वह पदार्थ जमने लगता है या खौलने लगता है। अंत में प्रत्येक गैस के लिए भी वह चरम बिन्दु निश्चित है जब यथावश्यक दबाव और शीत से उसे द्रव पदार्थ में परिवर्तित किया जा सकता है... भौतिक विज्ञान में जिन्हें हम स्थित बिन्दु कहते हैं वे अधिकतर और कुछ नहीं, क्रांति बिन्दुओं के ही नाम हैं जहां गति के परिमाणगत ह्रास या वृद्धि से उस पदार्थ की स्थिति में एक गुणगत परिवर्तन आ जाता है। फलत: इन क्रांति बिन्दुओं पर परिमाण का गुण में रूपांतर हो जाता है।'' (एंगेल्स, डाइलैक्टिक्स ऑफ नेचर)

आगे रसायन शास्त्र के बारे में एंगेल्स ने लिखा है-''पदार्थों की अणुबद्ध रचना में परिवर्तन होने से गुणात्मक परिवर्तन संभव होते हैं। इन गुणात्मक परिवर्तनों के विज्ञान को हम रसायनशास्त्र कहते हैं। हेगेल को यह मालूम हो चुका था ... उदाहरण के लिए, आक्सीजन के अणु में दो परमाणु होते हैं। इन दो के बदले यदि तीन

(शेष पृष्ठ 4 पर)

द्वंद्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवाद...

(पृष्ठ 3 का शेष)

परमाणु कर दिए जाएं तो ओजोन बन जाती है जो गंध और प्रतिक्रिया में साधारण आक्सीजन से नितांत भिन्न होती है और जब आक्सीजन अलग-अलग अनुपात में नाइट्रोजन या गंधक से मिलायी जाती है तब तो उसका कहना ही क्या! हर अनुपात में ऐसा पदार्थ बनता है जो गुणात्मक दृष्टि से दूसरे पदार्थों से भिन्न होता है।''(वही)

ड्यूहरिंग ने हेगेल को फटकारने में कुछ उठा न रखा था, परंतु हेगेल से ही उसने इस सुपरिचित सिद्धांत को लिया था कि अचेतन से चेतन की ओर, निर्जीव पदार्थ से सजीव प्राणी की अवस्था में संक्रमण एक छलांग में एक नई स्थिति में पहुंच जाने की तरह होता है। ड्यूहरिंग की आलोचना करते हुए एंगेल्स ने लिखा है: ''हेगेल की परिमाण संबंधी क्रांति रेखा के सिवा यह और कुछ नहीं है। वह वृद्धि या ह्रास जो विशुद्ध रूप में परिमाण संबंधी है, कुछ क्रांति बिन्दुओं पर पहुंच कर ऐसे गुण-भेद का कारण बन जाता है जो कई सीढ़ियों को एक साथ लांघ जाने के समान है। उदाहरण के लिए, गर्माये या ठंडाये पानी के वाष्प-बिन्दु और हिम-बिंदु वे क्रांति बिन्दु हैं जहां तक साधारण दबाव से जल के ठंडा या गर्म होने पर एक साथ कई मंजिलें लांघ कर एक महान परिवर्तन होता है और एक नई गुणात्मक स्थिति प्राप्त होती है। उस स्थिति में परिमाण का गुण में रूपांतर हो जाता है।'' (एंगेल्स, ड्यूहरिंग मत खंडन)

(घ)पराभूतवाद के विपरीत, द्वंद्ववाद का सिद्धांत यह है कि प्रकृति के सभी बाह्य रूपों और पदार्थों में अंतर्विरोध सहज रूप से विद्यमान रहते हैं। इन पदार्थों और रूपों के सकारात्मक-पक्ष और नकारात्मक-पक्ष दोनों हैं। उनका एक अतीत और एक भविष्य है। कुछ मरता जा रहा है तो कुछ विकसित होता जा रहा है। एक अंश मरणशील है तो दूसरा विकासोन्मुख है। इन दो विरोधी अंशों का संघर्ष – पुरातन और नवीन, मरणशील और विकासोन्मुख, नाश और निर्माण का संषर्ष ही, विकास क्रम की आंतरिक प्रक्रिया है। परिमाणभेद के गुण-भेद में परिवर्तन होने की यही आंतरिक प्रक्रिया है।

इसलिए द्वंद्वात्मक पद्धति के अनुसार निम्न से ऊर्ध्व की ओर विकास इस क्रम में नहीं होता है कि प्रकृति के स्तर, एक के बाद एक सहज गति से खुलते जायें। इसके प्रतिकूल, विकास क्रम में पदार्थों और प्रकृति के बाह्य रूपों में सहज रूप से विद्यमान विसंगतियाँ ही खुलती जाती हैं। इन विसंगतियों के आधार पर जो विरोधी प्रवृत्तियां क्रियाशील हैं उनका 'संघर्ष' ही खुलता जाता है। लेनिन के शब्दों में: ''वास्तव में पदार्थों के सारतत्वों में ही अंतर्निहित अंतर्विरोध के अध्ययन का नाम द्वंद्ववाद है।'' (लेनिन, दर्शन संबंधी नोटबुक, रूसी संस्करण, पृष्ठ 263) लेनिन ने यह भी कहा है: ''विरोधी तत्वों के संघर्ष का नाम ही विकास है।'' (संक्षिप्त लेनिन ग्रंथावली, रू.सं, खं.13,पृ.301) संक्षेप में, मार्क्सीय द्वंद्वात्मक पद्धति के यही मुख्य लक्षण हैं।

समाज के जीवन और इतिहास का अध्ययन करने के लिए सामाजिक क्षेत्र में द्वंद्वात्मक पद्धति के सिद्धांतों का प्रसार कितना महत्वपूर्ण है और समाज के इतिहास तथा सर्वहारा वर्ग की पार्टी की प्रत्यक्ष कार्यवाही पर उस सिद्धांत का लागू किया जाना क्या महत्व रखता है इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

यदि संसार में कोई वस्तु विछिन्न और एकाकी नहीं है, यदि सभी वस्तुएं परस्पर निर्भर और संबद्ध हैं तो यह स्पष्ट है कि इतिहास की किसी भी समाज व्यवस्था या सामाजिक आंदोलन का मूल्यांकन हम किसी भी 'शाश्वत न्याय' अथवा पूर्व कल्पित सिद्धांत से नहीं कर सकते हैं, इस प्रकार का मूल्यांकन इतिहासकारों द्वारा कभी-कभी नहीं किया जाता है। यह मूल्यांकन हम उन परिस्थितियों में विचार करके ही कर सकते हैं जिसने उस समाज व्यवस्था या सामाजिक आंदोलन को जन्म दिया है और जिससे वे सम्बद्ध हैं।

वर्तमान परिस्थिति में दास प्रथा निरर्थक, अस्वाभाविक और मूर्खतापूर्ण होगी। परंतु जब आदिम साम्यवादी व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही थी तब दास प्रथा का कायम होना अच्छी तरह समझ में आ सकता हैं तब की परिस्थितियों में वह एक स्वाभाविक घटना थी क्योंकि आदिम साम्यवादी व्यवस्था को देखते हुए वह एक उन्नत व्यवस्था थी।

जब जारशाही और पूंजीवादी व्यवस्था विद्यमान थी तब उदाहरण के लिए 1905 के रूस में ... एक पूंजीवादी जनवादी प्रजातंत्र की मांग अच्छी तरह से समझ में आ सकती थी। वह एक उचित और क्रांतिकारी मांग थी क्योंकि उस समय पूंजीवाद जनवादी प्रजातंत्र की प्राप्ति का अर्थ होता प्रगति की राह में एक कदम आगे बढ़ना। परंतु अब सोवियत संघ की परिस्थितियों में पूंजीवादी जनवादी प्रजातंत्र की मांग एक अर्थहीन और क्रांति-विरोधी मांग होगी क्योंकि सोवियत प्रजातंत्र की तुलना में पूंजीवादी प्रजातंत्र पिछली मंजिल की तरफ लौटने जैसा होगा।

देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार ही प्रगति और प्रतिक्रिया का निर्णय हो सकता है।

यह स्पष्ट है कि सामाजिक घटनाओं के प्रति इस ऐतिहासिक दृष्टिकोण के बिना, इतिहास के विज्ञान का अस्तित्व और विकास असंभव है। इतिहास का विज्ञान तारतम्यहीन घटनाओं की सूची और क्षुद्रतम भ्रांतियों का संकलन न बने यह इस दृष्टिकोण द्वारा ही संभव है और यदि संसार निरंतर गतिशील और विकासमान अवस्था में है, यदि पुरातन का ह्रास और नवीन का अभ्युदय विकास का एक नियम है तो यह स्पष्ट है कि सामाजिक व्यवस्थायें '' चिरंतन'' नहीं हो सकतीं, शोषण और व्यक्तिगत सम्पत्ति, ''शाश्वत सत्य'' नहीं हो सकते। किसान पर जमींदार और मजदूर पर पूंजीपति का प्रभुत्व, ''त्रिकाल सत्य'' नहीं हो सकते।

इसलिए पूंजीवादी व्यवस्था की जगह समाजवादी व्यवस्था कायम की जा सकती है जैसे कि एक समय में सामंतवादी व्यवस्था की जगह पूंजीवादी व्यवस्था कायम की गई थी।

इसलिए हमें अपने भावी कार्यक्रमों का फैसला समाज के उन वर्गों के आधार पर नहीं करना चाहिए जिनका विकास बंद हो चुका है, चाहे अभी उन्हीं की तूती बोलती हो। हमें उन वर्गों को आधार बनाना चाहिए जो विकासमान हैं और जिनका भविष्य उज्जवल है चाहे अभी तक वे प्रमुख शक्ति न बन पाये हों।

उन्नीसवीं शताब्दी के नवें दशक में जब मार्क्सवादियों और नरोदवादियों का संग्राम चल रहा था, रूसी सर्वहारा वर्ग साधारण जनता का एक बहुत अल्प भाग था। इसके विपरीत खेतिहर-किसान, जनता के बहुसंख्यक भाग थे। परंतु सर्वहारा वर्ग एक विकासमान वर्ग था जबकि वर्ग के रूप में किसान छिन्न-भिन्न हो रहे थे और चूंकि सर्वहारा वर्ग एक विकासमान वर्ग था मार्क्सवादियों ने उसी के आधार पर अपनी नीति निर्धारित की। जैसा कि अब विदित है उनकी यह धारणा गलत न थी क्योंकि आगे चलकर यह सर्वहारा वर्ग एक छोटी सी शक्ति से विकसित होकर उच्च कोटि की ऐतिहासिक और राजनीतिक शक्ति बन गया।

इसलिए अपनी नीति में भूल-चूक से बचने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य अतीत पर अपनी दृष्टि न जमाकर भविष्य की ओर देखे।

पुन:, यदि यह विकास का नियम है कि परिमाण-सम्बन्धी धीमे परिवर्तन, अकस्मात् और शीघ्रता से गुण-सम्बन्धी परिवर्तनों का रूप धारण कर सकते है, तो स्पष्ट है कि उत्पीड़ित वर्गों द्वारा की गई क्रान्ति भी एक अत्यन्त स्वाभाविक और अनिवार्य घटना है।

इसलिए धीमे-धीमे परिवर्तनों और सुधारों द्वारा पूँजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण करना असंभव है। इस ढंग से पूँजीवाद की गुलामी से मजदूर-वर्ग की मुक्ति हासिल नहीं हो सकती है। यह तो तभी संभव है जब क्रान्ति द्वारा पूँजीवाद व्यवस्था से, एक गुणात्मक परिवर्तन किया जाए।

इसलिए नीति में भूल न करने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य सुधारवादी न होकर क्रान्तिकारी हो।

पुन:, यदि विकास का यह क्रम है कि आन्तरिक अंतर्विरोधों के खुलने से वह आगे बढ़ता है और इस अंतर्विरोधों पर विजय पाने के लिए उन्हीं के आधार पर विरोधी शक्तियों में संघर्ष होता है, तो यह स्पष्ट है कि मजदूरों का वर्ग-संघर्ष, अत्यन्त स्वाभाविक और अपरिहार्य है।

इसलिए पूँजीवादी व्यवस्था के अंतर्विरोधों पर पर्दा न डालकर हमें उनका खुलासा करना चाहिए। वर्ग-संघर्ष को रोकने का प्रयास न करके हमें उसे उसके अन्तिम परिणाम तक ले जाना चाहिए।

इसलिए नीति में भूल न करने के लिए यह आवश्यक है कि बिना किसी मेल-मुलाहजे के हम सर्वहारा वर्ग नीति का पालन करें, न कि सर्वहारा और पूँजीपति वर्गों के हितों में सामंजस्य स्थापित करने की सुधारवादी नीति का। और न ही ''पूँजीवाद के समाजवाद में विकसित होने'' की समझौतावादियों की नीति का।

समाज के जीवन और इतिहास पर लागू किये जाने पर, मार्क्सवादी द्वन्द्वात्मक प्रणाली का यही रूप होता है।

जहाँ तक मार्क्सवादियों के दार्शनिक भौतिकवाद का सम्बन्ध है, वह दार्शनिक भाववाद का एकदम उल्टा है।

(2) मार्क्सवादियों के दार्शनिक भौतिकवाद के मुख्य लक्षण इस प्रकार हैं:

(क) भाववाद के अनुसार यह विश्व किसी 'पूर्ण अध्यात्म तत्व', किसी 'सर्वव्यापी आत्मा', 'भाव' या 'चेतना' का मूर्त स्वरूप है। इसके विपरीत मार्क्स के दार्शनिक भौतिकवाद का कहना है कि संसार स्वभाव से ही भौतिक है। इसके बहुविध रूप, गतिशील पदार्थ (या भूत) के ही विभिन्न रूप हैं। ये रूप परस्पर निर्भर और सम्बद्ध हैं और जैसा कि द्वन्द्वात्मक प्रणाली ने सिद्ध किया है, यह परस्पर निर्भर और सम्बद्धता ही, गतिशील पदार्थ (भूत) के विकास का नियम है। संसार को किसी 'सर्वव्यापी आत्मा' की आवश्यकता नहीं है, उसका विकास पदार्थ की गतिशीलता के नियमों के अनुकूल होता है।

एंगेल्स के शब्दों में, 'प्रकृति जिस रूप में है, उसे बिना किसी बाहरी मिलावट के जैसा का तैसा ग्रहण करना ही, प्रकृति के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण है', (एंगेल्स, लुडविग फायरबाख)

प्राचीन ग्रीक दार्शनिक हैरीक्लाइटस के अनुसार: 'व्यष्टि में समष्टि रूपी इस संसार को किसी देवता या मनुष्य ने नहीं बनाया वरन् वह एक सप्राण ज्योति है, जो थी, है और सदा रहेगी। जो नियमित रूप से जल उठती है और नियमित रूप से ठण्डी होती जाती है।' लेनिन ने लिखा है कि 'यह द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के मूलतत्वों की बड़ी अच्छी व्याख्या है' (लेनिन, दर्शन-सम्बन्धी नोटबुक)

(ख) भाववाद केवल चित् की वास्तविक सत्ता स्वीकार करता है। उसके लिए प्रकृति या भौतिक जगत की सत्ता केवल हमारे चित् में, इन्द्रिय बोध में, कल्पनाओं और संवेदनाओं में है। इसके प्रतिकूल, मार्क्सवादी भौतिकवादी दर्शन का कहना है कि प्रकृति या भौतिक संसार की सत्ता, एक वैज्ञानिक वास्तविकता है जो हमारे चित् से बाहर और उससे स्वतंत्र है। पदार्थ (भूत) मूल है क्योंकि वही संवेदनाओं, कल्पनाओं और चित् का उद्गम है। चित् गौण और उसी से उत्पन्न है क्योंकि वह पदार्थ का, सत्ता का प्रतिबिम्ब है। पदार्थ (भूत) विकसित होकर उच्च अवस्था में मस्तिष्क का रूप धारण करता है। विचारों की क्रिया मस्तिष्क द्वारा सम्पन्न होती है। इसलिए विचार पदार्थ-जन्य है। विचार को प्रकृति और पदार्थ से विच्छिन्न करना भारी भूल होगी।

एंगेल्स ने लिखा है: 'अस्तित्व और विचार (सत् और चित्) आत्मा और प्रकृति के सम्बन्ध का प्रश्न, समग्र दर्शन का मूल प्रश्न है .... इस प्रश्न का उत्तर दार्शनिक दो प्रकार से देते हैं जिससे उनकी दो प्रमुख श्रेणियाँ बन गई हैं। जो प्रकृति की अपेक्षा भाव या आत्मा की प्रधानता स्वीकार करते हैं, वे भाववादी श्रेणी में आते हैं। इनसे भिन्न जो प्रकृति को प्रधान मानते हैं, वे भौतिकवाद की शाखा-प्रशाखाओं के अर्न्तगत आ जाते हैं।' (संक्षिप्त मार्क्स-ग्रन्थावली) और यह भी .... 'भौतिक और गोचर संसार, जिसमें हमारा भी समावेश है, एकमात्र सत्य है। .... हमारी चेतना और हमारे विचार चाहे जितने इन्द्रियातीत जान पड़ें, परन्तु वे वास्तव में एक भौतिक, दैहिक, एंद्रिक मस्तिष्क की उपज हैं। पदार्थ (भूत) मन में उत्पन्न नहीं हुआ है वरन् मन ही पदार्थ (भूत) की सर्वोत्कृष्ट सृष्टि है।' (वही)

पदार्थ और विचार के सम्बन्ध में मार्क्स का कहना है: 'चिन्तन को चिन्तक वस्तु से, जो भौतिक है,

(शेष पृष्ठ 5 पर)

द्वंद्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवाद...

(पृष्ठ 4 का शेष)

अलग-थलग करना असंभव है। सारे परिवर्तनों का विषय पदार्थ ही है।' (वही)

भौतिकवाद के मार्क्सवादी दर्शन की व्याख्या करते हुए लेनिन ने लिखा है: 'साधारणत: भौतिकवाद वास्तविक सत्ता (पदार्थ) की चेतना, संवेदना और अनुभव से वस्तुगत स्वतंत्रता स्वीकार करता है। चेतना केवल सत्ता का प्रतिबिम्ब है, अधिक से अधिक उसका यथासम्भव निकटतम प्रतिबिम्ब है, जिसमें पर्याप्त सही-सही प्रतिबिम्बन है।' (लेनिन, मैटेरियज़्म एंम्पिरियो क्रिटिसिज़्म) और यह भी कि: 'पदार्थ (भूत) वह है जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों पर आघात करके संवेदना उत्पन्न करता है। पदार्थ वह वस्तुगत (वैज्ञानिक) सत्य है जो हमें संवेदना में प्राप्त होता है..... भौतिक जगत् पदार्थ, सत्ता, जो कुछ भी प्राकृतिक है वह मूल है। आत्मा, चेतना, संवेदना, जो कुछ भी मानसिक है, वह गौण है।' (वही) और भी.... 'सृष्टिज्ञान का अर्थ इसका ज्ञान है कि पदार्थ (भूत) की गति कैसे होती है और कैसे वह चिन्तन करता है। और यह कि 'मस्तिष्क, चिन्तन करने वाला अंग है।'' (वही)

(ग) आदर्शवाद संसार और उसके नियमों को जानने की संभावना को अस्वीकार करता है। वह हमारे ज्ञान की प्रामाणिकता को भी स्वीकार नहीं करता। उसके लिए 'वस्तुगत सत्य' कोई नहीं है। उसका विश्वास है कि संसार में ऐसे 'वस्तु सत्य' हैं जिनकी विज्ञान को कभी भी जानकारी नहीं हो सकती। इसके विपरीत भौतिकवाद के मार्क्सवादी दार्शनिक का कहना है कि संसार और उसके नियम पूर्णरूप से बोधगम्य हैं। अभ्यास और प्रयोग की कसौटी पर परखा हुआ हमारा प्रकृति के नियमों का ज्ञान प्रामाणिक है और वैज्ञानिक सत्य के समान निर्भ्रान्त है। संसार में अज्ञेय जैसी कोई वस्तु नहीं है, अज्ञान वस्तुएँ अवश्य हैं जो विज्ञान और अभ्यास द्वारा उद्घाटित होंगी और तब वे ज्ञेय हो जाएंगी।

यह संसार अज्ञेय है और इसमें ऐसे 'वस्तु-सत्य' हैं जो अज्ञेय है, ऐसा कहने वाले काण्ट तथा दूसरे भाववादियों की आलोचना करते हुए और हमारा ज्ञान प्रामाणिक ज्ञान है, इस सुपरिचित भौतिकवादी धारणा का समर्थन करते हुए, एंगेल्स ने लिखा है: 'इस प्रकार की तथा अन्य सभी दार्शनिक कल्पनाओं का उत्कृष्ट खण्डन व्यवहार है, व्यवहार अर्थात् प्रयोग और उद्योग। यदि हम भौतिक-क्रम स्वयं उत्पन्न कर सकते हैं, अर्थात् प्राकृतिक परिस्थितियों को कृत्रिम रूप से जुटा कर उनसे किसी भौतिक क्रिया को दुहरा सकते है और उससे लाभ भी उठा सकते हैं, तो भी भौतिक-क्रम की हमारी धारणा तो सिद्ध हो जाती है, काण्ट के अज्ञेय 'वस्तु-सत्यों' का भी वहीं अन्त हो जाता है। वनस्पति और प्राणी-मात्र के पिण्डों में जो रासायनिक द्रव्य बनते थे, वे ऐसे ही 'वस्तु सत्य' थे। परन्तु जब कार्बन रसायन-शास्त्र (आर्गेनिक केमेस्ट्री) एक के बाद एक ये सत्य तैयार करने लगा, तो उन पर हमारा भी स्वत्व हो गया। उदाहरण के लिए अलजेरिन या कुसंधी रंग के लिए वनस्पति का सहारा न लेकर अब हम उसे ज्यादा आसानी से कोलतार से बना लेते हैं जो सस्ता भी पड़ता है। तीन शताब्दियों तक कॉपर्निकस का सौर मण्डल एक प्रमेय रहा, यद्यपि उसके सही होने के पक्ष में एक के मुकाबले सौ, हजार, दस हजार अवसर थे, फिर भी था तो प्रमेय ही। परन्तु जब लेवेरियेर ने इस व्यवस्था से प्राप्त जानकारियों के बल पर एक अज्ञात ग्रह की अपरिहार्य सत्ता ही नहीं प्रतिपादित की वरन् आकाश में उसके अनिवार्य स्थान की भी गणना कर ली और जब गाले ने उस ग्रह को वास्तव में ही खोज निकाला तो कॉपर्निकस का प्रमेय सिद्ध हो गया।'' (पृ. 368)

बोगदानौफ, बाजारौफ, युश्केविच तथा बाख के दूसरे अनुयाइयों पर श्रद्धावाद का आरोप लगाते हुए, प्रकृति का ज्ञान प्रमाणिक है तथा विज्ञान के नियम वस्तुगत सत्य हैं, इस सुपरिचित धारणा का समर्थन करते हुए लेनिन ने लिखा है: 'आधुनिक श्रद्धावादी विज्ञान को अस्वीकार नहीं करते। उनकी समझ में केवल विज्ञान का यह दावा बहुत बढ़ा-चढ़ा है कि वह वस्तुगत सत्य को जान सकता है। किन्तु यदि वस्तुगत सत्य सम्भव है (जैसा कि भौतिकवादियों का विचार है) और यदि बाह्य संसार को मानवीय 'अनुभव' के दर्पण में प्रतिबिम्बित करके प्रकृति-विज्ञान ही हमें वस्तुगत सत्य दे सकता है, तो श्रद्धावाद का यहीं से समूल ध्वंस हो जाता है।'

संक्षेप में मार्क्सवादी भौतिकवाद के यही मुख्य लक्षण हैं।

दार्शनिक भौतिकवाद के सिद्धान्तों का सामाजिक जीवन और इतिहास के क्षेत्र में विस्तार कितना महत्वपूर्ण है और समाज के इतिहास और सर्वहारा वर्ग की पार्टी पर उन्हें लागू करना क्या महत्व रखता है, यह सब सहज ही अनुमेय है।

यदि प्रकृति के बाह्य रूपों की परस्पर निर्भरता और सम्बद्धता प्रकृति के विकास का एक नियम है, तो सामाजिक जीवन की घटनाओं की परस्पर निर्भरता और सम्बद्धता भी कोई 'घटना' नहीं है वरन् सामाजिक विकास का एक नियम है।

इसलिए सामाजिक जीवन और समाज का इतिहास 'आकस्मिक घटनाओं' का संकलन मात्र नहीं रह जाता, इतिहास सुव्यवस्थित नियमों के अनुसार होने वाले समाज के विकास का इतिहास हो जाता है और समाज के इतिहास का अध्ययन एक विज्ञान बन जाता है।

इसलिए सर्वहारा वर्ग की पार्टी को अपनी नीति 'महान व्यक्तियों' की सद्भावनाओं या 'अन्त: प्रेरणा' या संसार की रीति-नीति' के अनुसार निर्धारित नहीं करनी चाहिए, उसे सामाजिक विकास के नियमों और इन नियमों के अध्ययन के बल पर अनी नीति निर्धारित करनी चाहिए।

और, यदि संसार ज्ञेय है और यदि भौतिक विकास के नियमों का ज्ञान प्रामाणिक है जिसकी वैधता वस्तुगत सत्यों के ही समान है, तो यह भी सिद्ध है कि सामाजिक जीवन और सामाजिक विकास भी ज्ञेय है, सामाजिक विकास के नियमों के सम्बन्ध में विज्ञान जो सामग्री प्रस्तुत करता है, वह प्रामाणिक है और इसकी वैधता वस्तुगत सत्यों के समान ही है।

इसलिए, यद्यपि सामाजिक जीवन की घटनाएँ गहन रूप से संश्लिष्ट हैं, फिर भी सामाजिक इतिहास का विज्ञान उतना ही नपा-तुला विज्ञान हो सकता है जितना कि उदाहरण के लिए, जीव विज्ञान। अतएव यह विज्ञान, व्यवहारिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सामाजिक विकास के नियमों का उपयोग कर सकता है।

इसलिए सर्वहारा वर्ग की पार्टी को अपने प्रत्यक्ष व्यवहार में आकस्मिक प्रयोजनों द्वारा प्रेरित न होकर, सामाजिक विकास के नियमों और उन नियमों से निकाले गए व्यवहारिक निष्कर्षों से अपना पथ निश्चित करना चाहिए। इसलिए समाजवाद मानव जाति के उज्जवल भविष्य की मधुर कल्पना मात्र न रहकर एक विज्ञान बन जाता है।

इसलिए विज्ञान और प्रत्यक्ष व्यवहार के अन्यान्याश्रय सम्बन्ध को, सिद्धान्त और कर्म की एकता को, सर्वहारा वर्ग की पार्टी का पथ-निर्देशक ध्रुवतारा होना चाहिए।

और यदि प्रकृति, सत्ता, भौतिक संसार मूल है और मन, विचार उससे उत्पन्न और गौण हैं, यदि भौतिक संसार मनुष्य के मन में स्वतंत्र एक वस्तुगत सत्य है, और मन इस वस्तुगत सत्य का प्रतिबिम्ब है, तो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि समाज का भौतिक जीवन, उसकी सत्ता भी मूल है और उसका आध्यात्मिक जीवन, उससे उत्पन्न और गौण है। समाज का भौतिक जीवन एक वस्तुगत सत्य है जिसका अस्तित्व मनुष्य की इच्छा से स्वतंत्र है। समाज का आध्यात्मिक जीवन, इस वस्तुगत सत्य का सत्ता प्रतिबिम्ब है।

इसलिए समाज के आध्यात्मिक जीवन के निर्माण के मूल सूत्र को, सामाजिक विचारों, सिद्धान्तों, राजनीतिक मतों और संस्थाओं के उद्गम को, उन विचारों, मतों और राजनीतिक संस्थाओं में ही न खोजना चाहिए वरन् उन्हें समाज के भौतिक जीवन की परिस्थितियों में, सामाजिक अस्तित्व में खोजना चाहिए, जिसका कि वे विचार सिद्धान्त, मत आदि प्रतिबिम्ब हैं।

इसलिए यदि सामाजिक इतिहास के विभिन्न युगों में विभिन्न सामाजिक विचार, सिद्धान्त, मत और राजनीतिक संस्थाएं पाई जाती हैं, यदि दास व्यवस्था में हमें एक तरह के सामाजिक विचार, सिद्धान्त, मत और राजनीतिक संस्थाएं मिलती हैं, सामन्तवादी व्यवस्था में दूसरी तरह की और पूँजीवादी व्यवस्था में तीसरी तरह की, तो इसकी व्याख्या हम विचारों, सिद्धान्तों, मतों और राजनीतिक संस्थाओं के 'स्वभाव', 'गुणों' आदि के ही सहारे नहीं कर सकते वरन् हम इसकी व्याख्या, सामाजिक विकास के विभिन्न युगों में समाज के भौतिक जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के सहारे करेंगे।

जैसी समाज की सत्ता होती है, समाज के भौतिक जीवन की जैसी परिस्थितियाँ होती हैं, वैसे ही विचार सिद्धान्त, राजनीतिक मत और राजनीतिक संस्थाएं होती है।

इस सम्बन्ध में मार्क्स का कहना है: ''मनुष्य का अस्तित्व उसकी चेतना द्वारा निश्चित नहीं होता वरन् उसकी चेतना ही उसके सामाजिक अस्तित्व द्वारा निर्धारित होती है।'' (संक्षिप्त मार्क्स ग्रंथावली,अं.सं.खं.1, पृ. 300)

इसलिए नीति में भूल न करने के लिए और मनोहारी स्वप्न-लोक में निरर्थक भ्रमण से बचने के लिए यह आवश्यक है कि सर्वहारा वर्ग की पार्टी अपनी कार्रवाई को ''मानव विवेक के सूक्ष्म सिद्धान्तों'' से न निर्धारित करे वरन् समाज के भौतिक जीवन की ठोस परिस्थितियों को, सामाजिक विकास की नियामक शक्ति समझकर, उन्हीं के अनुसार, अपनी नीति निर्धारित करे, उसे ''बड़े आदमियों'' की शुभ इच्छा पर नहीं, बल्कि समाज के भौतिक जीवन के विकास की वास्तविक आवश्यकताओं के आधार पर निर्धारित करना होगा।

रूस के कल्पनावादियों का, जिनमें नरोदवादी, अराजकतावादी और सामाजिक क्रान्तिवादी भी थे, उनका पतन अन्य बातों के अलावा इसलिए भी हुआ कि उन्होंने समाज के विकास में समाज के भौतिक जीवन की परिस्थितियों की प्रमुख भूमिका को स्वीकार नहीं किया था। भाववाद के दलदल में फँसकर वे समाज के भौतिक जीवन के विकास की आवश्यकताओं को भूल गए। उनकी अवहेलना करके, उनसे स्वतंत्र, समाज के वास्तविक जीवन से दूर, उन्होंने अपनी कार्रवाई का आधार बनाया, 'आदर्श योजनाओं' को, 'सर्वसमावेशी कार्यक्रमों' को।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शक्ति और सप्राणता का कारण यह है कि उसके क्रियात्मक व्यवहार का आधार सामाजिक भौतिक जीवन के विकास की आवश्यकताएँ हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद समाज के वास्तविक जीवन से कभी दूर नहीं भागता।

परन्तु मार्क्स के शब्दों से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि समाज के जीवन में सामाजिक विचारों, सिद्धान्तों, राजनीतिक मतों और राजनीतिक संस्थाओं का कोई महत्व नहीं है और वे सामाजिक अस्तित्व तथा सामाजिक जीवन की भौतिक परिस्थितियों के विकास में सहायक नहीं है। अभी तक हम इस बात की विवेचना कर रहे थे कि सामाजिक विचारों, सिद्धान्तों, मतों और राजनीतिक संस्थाओं का 'उद्गम' क्या है, वे किस प्रकार फलती-फूलती हैं और कैसे समाज का आध्यात्मिक जीवन उसके भौतिक जीवन की परिस्थितियों का ही प्रतिबिम्ब है। जहाँ तक सामाजिक विचारों, सिद्धान्तों, मतों और राजनीतिक संस्थाओं के महत्व और इतिहास में उनकी भूमिका का सम्बन्ध है, वहाँ उसे अस्वीकार करना तो दूर, ऐतिहासिक भौतिकवाद समाज के जीवन और इसके इतिहास में इन कारकों की भूमिका और उनके महत्व पर, खास जोर देता है।

सामाजिक विचार और सिद्धान्त कई प्रकार के होते हैं। एक तो पुराने विचार और सिद्धान्त, जिसका युग समाप्त हो गया है और जो समाज की ह्रासोन्मुखी शक्तियों के हितों की रक्षा करते हैं। उनका महत्व यही है कि वे समाज के विकास, उसकी प्रगति में बाधक हैं। इनके सिवा नए और प्रगतिशील विचार और सिद्धान्त हैं जो, समाज की प्रगतिशील शक्तियों के हितों के रक्षक हैं। उनका महत्व इस बात में है कि वे समाज के विकास, उसकी प्रगति में सहायक होते हैं। जैसे-जैसे समाज के भौतिक जीवन के विकास की आवश्यकताओं को अधिक सावधानी से प्रतिबिम्बित करते हैं, वैसे-वैसे उनका महत्व भी बढ़ता जाता है।

नए सामाजिक विचार और सिद्धान्त तभी उत्पन्न होते हैं जब समाज के भौतिक जीवन का विकास समाज के सामने नए कार्यभार रखता है। एक बार उत्पन्न हो

(शेष पृष्ठ 6 पर)

भारतीय नवजागरण के अग्रदूत ईश्वरचंद्र विद्यासागर के जन्म दिवस पर

पास-फेल प्रथा के खात्मे, निजी विश्वविद्यालय बिल, शिक्षा के निजीकरण का बुद्धिजीवियों ने किया विरोध

पटना : 26 सितंबर भारतीय नवजागरण के अग्रदूत ईश्वरचंद्र विद्यासागर की जयन्ती के मौके पर पटना के भगत सिंह चौक पर अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ कमिटी की बिहार राज्य कमिटी की ओर से खुली विरोध सभा का आयोजन किया गया।

इस विरोध सभा को शहर के प्रतिष्ठित बुद्धिजीवियों ने संबोधित करते हुए कहा कि आज शिक्षा क्षेत्र की हालत दयनीय हैं। यह क्षेत्र दो हिस्सों में विभक्त है। एक जिसे लोग अत्यधिक रकम देकर खरीद सकते हैं। दूसरा जो पैसे नहीं दे सकते, शिक्षा उनकी पहुँच से बाहर है। केन्द्र और राज्य सरकार– दोनों लोगों को शिक्षा देने की अपनी जवाबदेही से पल्ला झाड़ती जा रही हैं। वे न तो धन मुहैया करा रही हैं और न ही शिक्षा संचालन का उत्तरदायित्व निभा रही हैं। वे निजी मालिकों को अकूत मुनाफा लूटने के लिए संपूर्ण शिक्षा क्षेत्र को उनके हाथों सौंप रही हैं। निजीकरण और व्यापारीकरण कर शिक्षा को एक बाजारू माल में बदला जा रहा है। इसका मूल्य भी बाजार मांग के हिसाब से निर्धारित हो रहा है। साथ ही अध्ययन–अध्यापन की जाँच का पैमाना पास–फेल परीक्षा प्रणाली को ही हटाकर भ्रष्टाचार की जमीन तैयार कर दी गयी है और यह लाखों लोगों के लिए मजाक बन चुकी है। इसके खत्म होने से शिक्षा का स्तर गिरेगा, अध्ययन–अध्यापन का स्तर गिरेगा, वर्तमान स्थिति में भ्रष्टाचार बढ़ेगा और शिक्षा के निजीकरण व व्यापारीकरण को बढ़ावा मिलेगा। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने जिस धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक और जनवादी शिक्षा के परचम को बुलंद किया था, उसे शासक पूंजीपति वर्ग की सरकारों ने कूड़ेदान में फेंक दिया है।

वक्ताओं ने आगे कहा कि आजादी आंदोलन के लोगों की इच्छा और चाहत थी कि आजाद भारत में सरकार सभी भारतवासियों को मुफ्त शिक्षा मुहैया करायेगी और सरकार का यह प्राथमिक दायित्व होगा। लेकिन यह कार्य अब तक नहीं हो सका। आज सरकार केन्द्रीकृत प्राधिकार के हाथों में पूरी शक्तियाँ सौंप रही है।

सभा को संबोधित करने वालों में शहर के प्रतिष्ठित बुद्धिजीवियों में जे एन यू के सेवानिवृत प्राध्यापक सह शिक्षा बचाओ कमिटी, बिहार राज्य कमिटी के अध्यक्ष प्रो. ईश्वरी प्रसाद, मगध वि.वि. के कॉलेज ऑफ कॉमर्स के प्राध्यापक प्रो. सफदर इमाम कादरी, प्रो. आर. बी. सिंह, टी. के. घोष एकेडमी के सेवानिवृत शिक्षक श्री आर. एन. झा, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य श्री एम. के. पाठक, बिहार राज्य कमिटी की सचिव साधना मिश्रा प्रमुख थे। सभा की अध्यक्षता प्रो. ईश्वरी प्रसाद ने जबकि मंच संचालन सूर्यकर जितेन्द्र ने किया।

द्वंद्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवाद...

(पृष्ठ 5 का शेष)

जाने पर ये सिद्धान्त और विचार, एक अत्यन्त बलवती शक्ति बन जाते हैं। वे समाज के भौतिक जीवन के विकास द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यों की पूर्ति में, समाज की प्रगति में, सहायक होते हैं। इसी कार्य में नए विचार, नए सिद्धान्त, नए राजनीतिक मत और नई राजनीतिक संस्थाएं अपना जौहर दिखाती हैं। सामाजिक शक्तियों को समेटने, संगठित करने और उनमें परिवर्तन करने की उनकी अद्‌भुत क्षमता तभी प्रकट होती है। नए सामाजिक विचार इसलिए उत्पन्न होते हैं कि वे समाज के लिए आवश्यक हैं। सामाजिक शक्तियों को समेटने, संगठित करने और उनमें परिवर्तन करने की, नए विचारों की क्षमता के बिना, समाज के भौतिक जीवन के विकास के अत्यावश्यक कार्यों को पूरा करना असम्भव होगा। समाज के भौतिक जीवन के विकास ने जो नए कार्य समाज के सामने रखे हैं, उनसे ये नए विचार और सिद्धान्त उत्पन्न होकर, मार्ग की विघ्न–बाधाओं को पार करते हुए जनता के पास तक पहुँचते हैं, पुन: जनता की ही निधि बन जाते है, समाज की ह्रासोन्मुखी शक्तियों के विरुद्ध जनता को समेटते और संगठित करते हैं और इस प्रकार समाज के भौतिक जीवन के विकास मे बाधक इन शक्तियों के नाश में सहायक होते हैं।

इस प्रकार समाज के भौतिक जीवन के विकास, सामाजिक सत्ता के विकास के अत्यावश्यक कार्यों की आधारभूमि से ही सामाजिक विचार, सिद्धान्त और राजनीतिक संस्थाएँ उत्पन्न होती हैं। आगे चलकर वे स्वयं सामाजिक सत्ता, समाज के भौतिक जीवन पर अपना क्रियात्मक प्रभाव डालती हैं और उन परिस्थितियों का निर्माण करती हैं जो समाज के भौतिक जीवन के अत्यावश्यक कार्यों की सम्यक पूर्ति के लिए, उसके भावी विकास को सम्भव बनाने के लिए आवश्यक हैं।

इस सम्बन्ध में मार्क्स का कहना है, 'जनता के हृदय में घर कर लेने पर सिद्धान्त, एक भौतिक शक्ति बन जाता है।' (हेगेल के दर्शन की आलोचना)

इसलिए समाज के भौतिक जीवन की परिस्थितियों पर अपना असर डालने के लिए और उनके विकास तथा उन्नति को गति देने के लिए सर्वहारा वर्ग की पार्टी के लिए आवश्यक है कि वह ऐसी सामाजिक धारणा और सिद्धान्त का आश्रय ले जो समाज के भौतिक जीवन के विकास और सामाजिक शक्तियों को समेटने और संगठित करने की आवश्यकताओं को ठीक–ठीक प्रतिबिम्बित करे और जो सामाजिक शक्तियों को समेटकर और संगठित कर तथा जन–साधारण को आगे बढ़ने की प्रेरणा देकर, सर्वहारा पार्टी को एक ऐसी शक्तिशाली सेना बनाने में समर्थ हो, जो प्रतिक्रियावादी शक्तियों का ध्वंस करने और समाज की अग्रगामी शक्तियों का मार्ग प्रशस्त करने में सफल हो सके।

'अर्थवादियों' और मेन्शेविकों का पतन अन्य बातों के अलावा इस कारण भी हुआ कि उन्होंने अग्रगामी सिद्धान्तों और विचारों की इस क्षमता को नहीं पहचाना कि वे सामाजिक शक्तियों को समेट सकते हैं, उन्हें गठित कर सकते हैं और उनमें परिवर्तन कर सकते हैं। निम्न–कोटि के गँवारू भौतिकवाद में फँसकर उन्होंने इन उपकरणों की भूमिका को नगण्य ठहराया और इस प्रकार पार्टी के लिए निष्क्रियता और निठल्लेपन का द्वार खोल दिया।

मार्क्सवाद–लेनिनवाद की शक्ति और सप्राणता का कारण यह है कि उसका आधार वे अग्रगामी सिद्धान्त हैं जो समाज के भौतिक जीवन के विकास की आवश्यकताओं को सही–सही प्रतिबिम्बित करते हैं। मार्क्सवाद–लेनिनवाद सिद्धान्तों को उनके योग्य उच्च आसन देता है और सामाजिक शक्तियों को समेटने, संगठित करने और उनमें परिवर्तन करने की जो भी क्षमता इन सिद्धान्तों में है, उसका रत्ती–रत्ती उपयोग करना वह अपना कर्तव्य समझता है।

सामाजिक अस्तित्व और सामाजिक चेतना का क्या सम्बन्ध है, समाज के भौतिक जीवन और आध्यात्मिक जीवन में क्या अन्तर है? इस प्रश्न का उत्तर ऐतिहासिक भौतिकवाद उपरोक्त ढंग से देता है।

(शेष अगले अंक में)

सांस्कृतिक संध्या का आयोजन

ग्वालियर (म.प्र) : नवजागरण काल के महान मनीषी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर व हमारे देश के महान क्रांतिकारी शहीद भगतसिंह की जयंती के अवसर पर ऑल इण्डिया डी.एस.ओ की ग्वालियर इकाई द्वारा 26–28 सितम्बर तक तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 26 सितम्बर को सांस्कृतिक संध्या की शुरूआत प्रख्यात कवि श्री पवन करन द्वारा महान क्रांतिकारी व महान मनीषियों के उद्धरणों की प्रदर्शनी के अनावरण और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर व भगतसिंह की तस्वीरों पर पुष्प अर्पित कर हुई। कार्यक्रम में विभिन्न स्कूल–कॉलेजों के छात्र–छात्राओं ने गीत, नृत्य नाटिका, नाटक व कविताएं प्रस्तुत की। 27 सितम्बर को भगतसिंह पर आधारित एक फिल्म शो हुआ। 28 सितम्बर भगतसिंह जयंती के अवसर पर एक स्मृति–सभा की गई। इसकी शुरूआत में छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम में गीत, कविताएं व नाटक का मंचन किया गया। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई(सी)पार्टी के जिला प्रभारी कॉ. सुनील गोपाल ने की।

सभा की मुख्य वक्ता कॉ. रचना अग्रवाल ने छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि क्रान्तिकारी शहीदों और मनीषियों के जीवन–संघर्ष को गहराई से जानना और उससे सीख लेना जरूरी है ताकि आज हम भी इस समाज में उपस्थित तमाम अन्याय, शोषण, दमन, उत्पीड़न का कारण जान सकें और इसके खिलाफ एकजुट हो सकें।

कॉ. सुनील गोपाल ने कहा कि शिक्षा का मूल उद्‌देश्य है उन्नत चरित्र निर्माण करना, वहीं आज सरकारें शिक्षा देने की जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ रही है। इसे केवल मुनाफाखोरी का एक बेहतर क्षेत्र समझने वाले बड़े–बड़े धन्नासेठों को पूंजीनिवेश करने की छूट दे रही है जिनका उद्‌देश्य सिर्फ तकनीक के चंद जानकारों को ही तैयार करना है। छात्र–छात्राओं द्वारा इसका विरोध किया जाने पर तरह–तरह के बहानों से घोर काले कानून लाकर विरोध की इस आवाज को दबाने का प्रयास कर रही हैं। कॉलेजों में धारा 144 लागू करने का प्रशासन का प्रयास इसका जीता–जागता उदाहरण है। उन्होंने जनविरोधी शिक्षा नीति के खिलाफ एक जोरदार छात्र आन्दोलन गठित करने की अपील की।

ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. की ग्वालियर इकाई की जिलाध्यक्ष कॉ. श्रुति शिवहरे ने भी बात रखी। सभा का संचालन कॉ. छवि परिहार द्वारा किया गया। कॉ. प्रकाश, आस्था मिताली, पूजा, मेघना, सत्यवीर, प्रयल अस्थाना ने भी कार्यक्रम सफल बनाने में भूमिका अदा की। अंत में एक मशाल जुलूस निकाल कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

भगत सिंह जयंती पर मशाल जुलूस

नाँगलकलां (सोनिपत): 28 सितम्बर को नाँगल कला गाँव में शहीद भगतसिंह जयन्ती पर मशाल जुलूस निकाला गया। इससे पहले शहीद भगत सिंह की तस्वीर पर माल्यार्पण किया गया। इसके बाद हुई सभा को सम्बोधित करते हुए एआईडीवाईओ सोनीपत जिला कमेटी के अध्यक्ष कॉ. देवेन्द्र और एआईडीएसओ की दिल्ली राज्य कमेटी के अध्यक्ष कॉ. भास्कारानन्द ने शहीद भगतसिंह के विचारों और जीवन–संघर्ष पर प्रकाश डाला। सभा स्थल पर शहीद भगत सिंह की उद्धरणों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

केन्द्र व प्रदेश सरकार की...

(पृष्ठ 1 का शेष)

दुभर कर दिया है। कुल मिलाकर सूबे बिहार की जनता जब एक दमघोंटू हालात में जीने को अभिशप्त है, ऐसे में एक तरफ जदयू, भाजपा, कांग्रेस, राजद सहित राज्य में मौजूद तमाम राजनैतिक पार्टियां जनता के मुद्दों को छोड़कर चुनावी ताल-मेल और विभिन्न प्रकार के समीकरण बैठाकर सत्ता की कुर्सी हासिल करने की जुगाड़ में मशगूल हैं; तो दूसरी तरफ भारत के मेहनतकश अवाम की सही क्रांतिकारी पार्टी एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) जन जीवन के ज्वलंत सवालों को लेकर राज्य में जन आंदोलन निर्मित करने की अथक कोशिश कर रही है। इसी क्रम में 30 सितम्बर को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) बिहार राज्य कमिटी के तत्वावधान में महंगाई, बेरोजगारी, महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार, शिक्षा-स्वस्थ्य-बिजली-परिवहन के निजीकरण तथा सुखाड़-बाढ़ सहित केन्द्र व राज्य सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ मुख्यमंत्री कार्यालय के समक्ष विशाल प्रदर्शन किया गया। राज्य के विभिन्न जिलों से भारी तादाद में आये किसान-मजदूर-छात्र-नौजवान तथा महिलाओं का झंडे-बैनरों से सुसज्जित जुलूस गांधी मैदान से शुरू हुआ। जुलूस में शामिल लोग कमरतोड़ महंगाई, महिलाओं पर बढ़ते अपराध-बलात्कार, शिक्षा-स्वास्थ्य-बिजली-परिवहन के निजीकरण के खिलाफ तथा सूखाड़ व बाढ़ पीड़ितों को पर्याप्त राहत देने की मांग करते हुए गगनभेदी नारे लगा रहे थे। राज्य व केन्द्र सरकार की जनविरोधी नीतियों के प्रति उनमें साफ आक्रोश झलक रहा था। राहगीर जुलूस को आशा-भरी नजरों से देख रहे थे। उनका मंतव्य था कि यह प्रदर्शन सचमुच जन सरोकार के मुद्दों को लेकर है। जुलूस फ्रेजर रोड, डाक बंगला चौराहा, पटना जंक्शन गोलम्बर, न्यू मार्केट, मीठापुर होते हुए आर ब्लॉक पहुंचा। आर ब्लॉक पहुंचने पर विशाल जुलूस सभा में तब्दील हो गया।

सभा को संबोधित करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) बिहार राज्य कमिटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. अरूण कुमार सिंह ने कहा कि सुशासन का दंभ भरने वाली राज्य सरकार शिक्षा-स्वास्थ्य-बिजली-परिवहन आदि सार्वजनिक क्षेत्रों में पीपीपी के तहत निजीकरण की प्रक्रिया अपना रही है, जिसके चलते शिक्षा, इलाज, बिजली आम आदमी की पहुंच से दूर होती जा रही है। कॉ. सिंह ने कहा कि चुनाव के जरिये सिर्फ सरकार बदलने से आम जनता की समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। इसके लिए जरूरत है तमाम तबके की जनता को लेकर ताकतवर जन आंदोलन निर्मित करने की। साथ ही साम्प्रदायिकता और जात-पात फैलाकर जनता की एकता को तोड़ने वाली फूटपरस्त मानसिकता को रोकने के लिए भी जुझारू जन आंदोलन की जरूरत है। उन्होंने राज्य सरकार तथा प्रशासन के अलोकतांत्रिक रवैये की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि प्रदर्शन की पूर्व सूचना दिये जाने के बावजूद उत्तर बिहार से आने वाले वाहनों को पुलिस-प्रशासन द्वारा शहर में आने से रोका गया, जो मानवाधिकार का घोर उल्लंघन है और जनवादी आंदोलन पर हमला है।

सभा की अध्यक्षता करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) राज्य सचिव कॉ.शिव शंकर ने कहा कि आज पूंजीवाद के जरिये जन समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। पूंजीवाद आज समाज को आगे नहीं ले जा सकता। जरूरत है जनता के जुझारू आंदोलनों को विकसित करते हुए पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति को कामयाब कर मजदूर-किसानों का राज कायम करने की। सभा को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) राज्य कमिटी सदस्य कॉ. साधना मिश्रा, कॉ. रामाधीन सिंह, कॉ. अर्जुन कुमार, कॉ. लाल बाबू महतो, कॉ. प्रमोद कुमार, कॉ. कृष्णदेव साह, कॉ. ललित कुमार घोष तथा कॉ. उमा शंकर वर्मा ने संबोधित किया। बाद में राज्य सचिव कॉ. शिव शंकर के नेतृत्व में एक पांच सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने मुख्यमंत्री को स्मार पत्र सौंपा।

पटना में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी की विशाल रैली का एक दृश्य

आई.सी.डी.एस. स्कीम के 38वें स्थापना दिवस पर आंगनवाड़ी कर्मियों की विशाल रैली

रोहतक (हरियाणा) : आई.सी.डी.एस. स्कीम के 38वें स्थापना दिवस 2 अक्तूबर को उपायुक्त, रोहतक के माध्यम से हरियाणा राज्य की हजारों आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं ने प्रधानमन्त्री व मुख्यमन्त्री के नाम मांगों का ज्ञापन दिया। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहायिका यूनियन हरियाणा ने आंगनवाड़ी स्कीम (आईसीडीएस) को अपग्रेड कर केन्द्र व राज्यों में इसका अलग से स्वतंत्र विभाग बनाने, महंगाई भत्ता देने, रिटायरमेंट पर पेन्शन व ग्रेच्युटी लाभ देने और सेवा शर्तों को सुधार कर विभागीय उत्पीड़न व नाजायज दबाव से छुटकारा दिलाने के लिए जोरदार आवाज उठाई। आंगनवाड़ी इम्पलाइज फैडरेशन ऑफ इण्डिया के आह्वान पर आज 2 अक्तूबर को पूरे देश भर में मांग दिवस मनाया गया । पहले छोटूराम पार्क में रैली की गई। इसके बाद एक विशाल विरोध प्रदर्शन किया गया।

ज्ञापन में कहा गया कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया जाये, ये रोजाना 8 घण्टे काम करती हैं। इन्हें सरकारी दस्तावेजों में सामाजिक कार्यकर्ता कहा जाता है, इसके स्थान पर इन्हें वर्कर तथा मानदेय भत्ते के स्थान पर वेतन लिखा जाये। कार्यकर्ताओं को 15000 रुपये तथा सहायिकाओं को 7500 रुपये मासिक दिये जायें। इसमें हर साल 5 प्रतिशत महंगाई भत्ता लागू किया जाये। रिटायर होने की उम्र 65 साल की जाये। रिटायर होने पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को 2 लाख रुपये व सहायिकाओं को एक लाख रुपये एकमुश्त बतौर ग्रेच्युटी दिये जायें और 3000 रुपय मासिक पेन्शन दी जाये। आंगनवाड़ी केन्द्र का किराया शहरों में 3000 रुपये, कस्बों में 1500 रुपये महीना तथा देहात में 750 रुपये महीना दिया जाये। आंगनवाड़ी केन्द्रों के खुलने व बन्द होने का समय पहले की तरह किया जाये और सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया जाये। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं व सहायिकाओं की सेवा शर्तों में सुधार किया जाये। उनके उत्पीड़न पर रोक लगाई जाये। कई ब्लाकों मे 6 माह से मेहनताना नहीं मिला है। इसलिए केन्द्र व राज्य उनका मेहनताना सीधे उनके बैंक खातों में हर महीने की 7 तारीख तक जमा करावें। मिनी आंगनवाड़ी केन्द्रों को अपग्रेड कर इनकी कार्यकर्ताओं व सहायिकाओं को पूरा मेहनताना दिया जाये। आंगनवाड़ी स्कीम से जिन कार्यों का सम्बन्ध नहीं है, वे वर्करों से न कराये जायें। सबला का कार्य अन्य विभाग से कराया जाये। किशोरी कन्या का राशन स्कूलों के माध्यम से दिया जाये।

रैली को यूनियन की राज्य अध्यक्ष बिमला नैन, राज्य महासचिव पुष्पा दलाल, उपप्रधान कृष्णा यादव व संतोष देवी, कोषाध्यक्ष शीला मोण, सचिव जनता यादव समेत हरियाणा संयुक्त कर्मचारी मंच के प्रदेश अध्यक्ष आर.के. नागर, महासचिव सूबे सिंह यादव व ऑल इण्डिया यूटीयूसी के प्रदेश सचिव हरि प्रकाश ने भी सम्बोधित किया।

रोहतक में आयोजित आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं व सहायिकाओं की रैली का एक दृश्य

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7-8 and 22-23 Fortnightly, Date of Printing :20 Oct., 2013

लक्ष्मणपुर बाथे नरसंहार पर
पटना हाई कोर्ट के फैसले के बाद एसयूसीआई(सी) बिहार राज्य कमिटी द्वारा जारी बयान

पटना, 15 अक्तूबर: 1997 के दिसम्बर में राज्य के अरवल जिले के लक्ष्मणपुर बाथे में 58 लोगों की हत्या एक जाति विशेष के गुंडों द्वारा गोली मारकर कर दी गयी थी। मारे गये सभी अत्यंत कमजोर जातियों, अनुसूचित जातियों के थे। मृतकों में 27 महिलाएं और 10 बच्चे भी शामिल थे। इस घटना की राष्ट्रव्यापी तीव्र भर्त्सना हुई थी। तत्कालीन राष्ट्रपति के. आर. नारायणन ने इसे राष्ट्रीय शर्म कहा था। लोवर कोर्ट से 16 लोगों को फांसी और 10 को आजन्म कारावास की सजा सुनायी गयी थी। लेकिन गत 10 अक्तूबर को पटना हाई कोर्ट ने सभी अभियुक्तों को बरी कर दिया। यह फैसला राज्य के गरीब, असहाय व कमजोर तबके के लोगों तथा न्याय पसंद जनता के लिए सदमा है।

सवाल उठता है कि इस प्रकार के नृशंस नरसंहार का दोषी कौन है? सरकार और पुलिस-प्रशासन, सीआईडी आदि, जिन पर आम जनता से उगाहे टैक्स की भारी रकम खर्च की जाती है, वह किसलिए? लोगों की जान-माल की हिफाजत की जिम्मेवारी सरकार व पुलिस-प्रशासन की है। उत्तर उन्हें ही देना होगा।

हमारे देश के आजादी आंदोलन में निहित कमजोरियों के कारण जाति-पाति, धार्मिक विद्वेष, क्षेत्रीयता, प्रांतीयता आदि से ऊपर उठकर राष्ट्रीय मानसिकता तैयार न हो सकी। फलस्वरूप जैसे अंग्रेजों ने हिन्दू और मुसलमानों में फूट डालो, राज करो की नीति अपनायी थी, वैसे ही आजादी के बाद देश का पूंजीपति वर्ग और उसकी ताबेदार राजनैतिक पार्टियां लोगों में जात-पात, धर्म-मजहब, प्रांतीयता का विद्वेष फैलाकर एक तरफ अचेत नागरिकों को सत्ता की कुर्सी पाने के लिए अपने वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल कर रही हैं, तो दूसरी तरफ महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार से त्रस्त एवं पूंजीवादी शोषण की चक्की में पिस रही जनता भातृघाती लड़ाइयों में फंसायी हुई है ताकि जन समस्याओं को लेकर एकजुट संघर्ष न कर सके।

आज जब आम अवाम पर चौतरफा हमले हो रहे हैं। ऐसे में समय की पुकार है कि शोषित-पीड़ित अवाम की मजबूत एकता व एकजुटता से ही इसे रोका जा सकता है और ताकतवर जनान्दोलन के जरिये ही शासक पूंजीपति वर्ग व उनकी सेवक पार्टियों के मंसूबों को नाकाम किया जा सकता है।

अमेरिका के साथ सामरिक गठजोड़ बनाने के भारत सरकार के कदम पर
एसयूसीआई(सी) ने जतायी गहरी चिन्ता
इसके घातक परिणामों के खिलाफ चौकस रहने की लोगों से की अपील

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 3 अक्तूबर को निम्न वक्तव्य जारी किया:

हम अत्यधिक चिन्तित हैं जिस प्रकार कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार देश के एकाधिकारी पूँजीपतियों के स्वार्थ में कुख्यात अमेरिकी साम्राज्यवादियों के एक के बाद एक मनहूस कदमों को मौन स्वीकृति दे रही है और द्विपक्षीय सम्बन्धों को मजबूत करने के नाम पर उनकी सभी मांगों को दब्बूपन से स्वीकार कर रही है। अमेरिकी साम्राज्यवादी अपने सामने चुपचाप समर्पण कराने की खातिर हर देश को अपनी आर्थिक और सामरिक शक्ति की धौंस दिखा रहे हैं। जबकि उन देशों पर बेशर्मी से आक्रमण कर रहे हैं जो उनके सामने घुटने टेकने से मना कर रहे हैं। यह एक बार फिर नग्न रूप से प्रकट हुआ है, जिस प्रकार देश के कांग्रेसी प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने वॉशिंगटन में अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ हालिया शिखर वार्ता में कुख्यात न्युक्लियर-ट्रीटी पर हस्ताक्षर करने से पहले साम्राज्यवादी सरकार द्वारा आदेशित तमाम दुष्टतापूण शर्तों को बेशर्मी से स्वीकार कर लिया और 'अतिविकसित व परिष्कृत टैक्नोलॉजी' सहित प्रतिरक्षा साजोसामान और सेवाओं के लिए प्रतिरक्षा टैक्नोलॉजी के हस्तांतरण, व्यापार, सह-विकास और सह-उत्पादन के सम्बन्ध में अमेरिका के एक घनिष्ट पार्टनर के रूप में भारत को सूचीबद्ध कराने के लिए, जंगखोर पेण्टागन के साथ औपचारिक प्रतिरक्षा गठजोड़ में प्रवेश किया और अमेरिकी शस्त्र उत्पादनकर्ता कॉरपोरेट अपने उत्पाद को भारत में बेचेंगे। यह भी बराबर निन्दनीय है कि भारतीय प्रधानमंत्री ने अमेरिकी साम्राज्यवादी शासकों की घिनौनी चापलूसी करते हुए सीरिया और इरान पर उनकी अति बर्बर और लुटेरी नीतियों का समर्थन किया, स्पष्ट रूप से वे भारत को एक विश्वशक्ति कहने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति के प्रति अपना आभार व्यक्त कर रहे थे।

भारतीय सरकार के इस कदम ने एक बार फिर हमारी पार्टी के विश्लेषण की पुष्टि की है कि शासक भारतीय बुर्जुआ जो पहले ही साम्राज्यवादी चरित्र अख्तियार कर चुका है और अमेरिकी साम्राज्यवादियों की मदद से दुर्जेय एशियाई महाशक्ति बनने और इस क्षेत्र में अपना प्रभाव क्षेत्र कायम करने की आधिपत्यवादी चाह संजोए हुए है, पेण्टागन के लुटेरों के अधिकाधिक नजदीक आता जा रहा है, यहाँ तक कि इसके लिए भारी मात्रा में रियायतों की पेशकश भी कर रहा है और प्रत्यक्ष या परोक्ष उनकी बहुत सी मनहूस अंतर्राष्ट्रीय नीतियों और कदमों का समर्थन कर रहा है।

इसलिए, तथाकथित सिविलियन न्युक्लियर ट्रीटी और अमेरिकी साम्राज्यवादियों के साथ सामरिक गठजोड़ करने के भारतीय बुर्जुआ सरकार के इन नितांत जनविरोधी कदमों के खिलाफ चौकस रहने के लिए आजादी-पसंद भारतीय लोगों का हम आह्वान करते हैं। इस गइजोड़ का मतलब होगा, दुनिया भर में युद्ध और युद्ध जैसे हालात पैदा करने के अमेरिकी साम्राज्यवादियों के अति बर्बर आधिपत्यवादी षड़यन्त्रों का, किसी भी बहाने या युक्ति की आड़ में अपनी मर्जी के मुताबिक कहीं भी किसी भी देश पर आक्रमणकारी युद्ध थोप देने का समर्थन करना। अन्तर्राष्ट्रीय कानून के सभी मानकों, कोडों और कन्वेंशनों को पैरों तले रौंद देने का समर्थन करना, सभी देशों की सार्वभौमता व स्वतंत्रता को गम्भीर खतरे में डाल देने और अन्तर्राष्ट्रीय सशस्त्र सेना की भूमिका खुद पर आयद कर लेने के दावे का समर्थन करना और इस प्रक्रिया में भारत को अमेरिका के ताबेदार देशों में से एक बना देना, जिसका मायना है भारत एक तरफ अब घृणित साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में जाना जाएगा, दूसरी तरफ अन्य देशों के लोग भारत को संदेह, अविश्वास और पराएपन की नजर से देखेंगे।

यू.पी. के विभिन्न जिलों में आंगनवाड़ी कर्मियों का प्रदर्शन

मुरादाबाद : आँगनबाड़ी एम्पलाइज फैडरेशन ऑफ इण्डिया (एईएफआई) के आह्वान पर 2 अक्तूबर को समेकित बाल विकास योजना (आईसीडीएस) का 38वां स्थापना दिवस राष्ट्रीय स्तर पर 'माँग दिवस' के रूप में मनाया गया। इसी क्रम में एईएफआई से सम्बद्ध आँगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका वेलवेयर एसोसिएशन, उ.प्र. (सम्बद्ध-एआईयूटीयूसी) के बैनर तले प्रदेश के जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन कर मांग पत्र माननीय मुख्यमंत्री उ.प्र. सरकार को भेजे गए। मांग पत्र में आंगनबाड़ी कर्मियों को नियमित करने के अलावा रिटायरमेण्ट के बाद सम्मानजनक जीवन जीने लायक पेंशन, ग्रेच्युटी तथा मानदेय शब्द हटाकर वेतन तथा उसके साथ महंगाई भत्ता देने की मांग की गई। आंगनवाड़ियों में कार्यरत हजारों कर्मियों ने प्रदर्शन में भाग लिया।

शहीद भगत सिंह की याद में कार्यक्रम

मशाल जला कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए कॉमरेड सत्यवान

बुडलाढा (पंजाब): 28 सितम्बर को शहीद व चिन्तक यादगार कमेटी की ओर से बढ़ाआणा गांव में शहीद भगत सिंह जयन्ती को समर्पित इन्कलाबी नाटक मेला आयोजित करवाया गया और पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई। शहीद भगतसिंह के विचारों को घर-घर फैलाने के मकसद से आयोजित यह नाटक मेला भारी संख्या में लोगों की मौजूदगी में शाम 7 बजे से देर रात तक चला।

यह मेला एसयूसीआई (सी) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉमरेड सत्यवान के द्वारा मशाल जलाकर शुरू किया गया। सबसे पहले नवयुग कला मंच लोगोवाल की ओर से नाटक पेश किया गया जो दर्शकों को मुग्ध करने में कामयाब रहा। इसके बाद सामाजिक कुरीतियों की निन्दा करते हुए और शहीद भगत सिंह की इन्कलाबी सोच को प्रदर्शित करने वाले तीन नाटकों का मंचन किया गया। इस मौके पर एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के पंजाब सूबा इन्चार्ज कॉमरेड अमिन्दर पाल सिंह ग्रेवाल ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज शहीद भगतसिंह की फोटो तो हर घर में है लेकिन उनकी रचनाएं किसी-किसी घर में मिलती हैं। उन्होंने कहा कि शहीद भगतसिंह के फोटो को पूजने की नहीं, बल्कि उनके विचारों को जानने और अमल में लाने की जरूरत हैं। कॉमरेड इन्दर सिंह मोहाली और 'शहीद व चिन्तक यादगार कमेटी' के सरपरस्त इन्दरजीत जोधा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। पंजाब लोक गायक भूपिन्दर ने इन्कलाबी और सामाजिक गीत गाकर समा बांध दिया। एकम मानुके और किरपाल सिंह हीरा के गीत भी लोगों को पसंद आए। अंत में इस कमेटी के प्रधान बेअंत सिंह ने उपस्थित दर्शकों का आभार व्यक्त किया और घर-घर लाइब्रेरी खोलने के लिए ग्रामवासियों को सहयोग देने की मांग की। इस मौके पर कमेटी के उप-प्रधान हरपिन्दर, महासचिव गगनदीप सहित कई जाने-माने नागरिक उपस्थित थे। मंच संचालक की भूमिका गुरूप्रीत ने निभाई।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com; sarvaharadrishtikon@yahoo.com